आदिवासियों की पारंपारिक जीवन शैली एंव आधुनिकता का प्रभाव

मोतिहारी
पूर्वी चम्पारण। 845401
(बिहार)

सारांश

आदिवासी से सभ्य नागरिक बनन` के प्रमाण सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं और यह भी सिद्व हो चुका है कि सिन्धु घाटी सभ्यता यहॉ के मूल निवासियों और जनजातियां की एक विकसित शहरी सभ्यता थी। लेकिन भारत की जन–जातियों को आदिवासी कहा जाता है। किसी भी समाज का अतीत बहुत महत्वपूर्ण होता है। भारत में तमाम संस्कृतियों के मुकाबले आदिवासी संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है। आदिवासी संस्कृति के पृष्ठों मे मनुष्य के उत्थान–पतन की कहानियॉ छिपी ह ुई है। आदिवासी समुदाय के जन्मजात गुण धर्मो मे सरलता, सहजता, सामुदायिकता, अपरिग्रह, निष्छलता, बन्धुता, सच्चाई, सामुदायिकता, ईमानदारी, परिश्रमशीलता, समानता व प्रकुत्ति से घनिष्ठता की भावना विद्यमान है। आदिवासी समाज में वास्तविक दुनिया के पल गुजारने पर उनकी भव्यता, दिव्यता व जीवतंता का एहसास होता है। आदिवासियों का दृष्टिकोण दपयोकगता वादी तथा विचार–धारा 'जीओ और जीने दो' की पक्षपाती है। कूट शब्द :– आदिवासी सरं कृति, गुणधर्म
ईमानदारी, परिश्रम शिलता, विचारधारा आदिवासियों का इतिहास–

मुख्य धारा से दूर जंगलों में निवास करने वाली आदिम जनजातियॉ आज भी सांस्कृतिक विलक्षणताओं के साथ जीवन यापन कर रही है। औधोगीकरण ने नगरीय मनोवृत्रियों को बढ़ाकर व्यक्तिवादिता तथा भौतिकतवाद के प्रति आकर्षण पैदा करके आदिवासियों के समाज म` जटिल समस्याओं कों जन्म दिया ।

अधिकांश आदिवासी संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवन यापन करते हैं। वे सामनयतः क्षेत्रीय समूहों मे रहते है ओर उनकी संस्कृति अनेक दृष्टियों से स्वयं पूर्ण रहती है। इन सरं कृतियों मे ऐतिहासिक जिज्ञासा का अभाव रहता है तथा ऊपर की थोड़ी ही पीढ़ीयों का अथार्थ इतिहास, क्रमशः किक्दंतियों और पौराणिक कथाओं मे मिलता हैं। सीमित परिधि तथा लघु जनसंख्या के कारण इन संस्कृतियां के रूप मे स्थिरता रहती है, किसी एक काल मे होनवाले सांस्कृतिक परिवर्तन अपने प्रभाव एंव व्यापकता मे अपेक्षाकृत सीमित होते हैं। परंपरा केंद्रित आदिवासी संस्कृतियॉ इसी कारण अ पने अनेक पक्षी मे रूढ़ीवादी सी दीख पड़ती है। उत्तर और दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, एशिया तथा अनेक द्वीपों और द्वीपसमूहों मे आज भी आदिवासी संस्कृतियों के अनेक रूप देखे जा सकते हं।

भारत मे अनसु ूचित आदिवासी समूहो की संख्या 700 से अधिक है। भारत मे 1871 से 1941 तक हुई जनगणना मे आदिवासियों को अन्य

धर्मो से अलग धर्म मे गिना गया।

जैसे :–

Other religion – 1871,

Forest Tribe - 1891,

Tribal religion – 1931, Tribe – 1941 इत्यादि नामों से वर्णित किया गया।

1951 की जनगणना के बाद से आदिवासियों की अलग से गिनना बन्द कर दिया गया है। भारत में आदिवासियों को दो वर्गो में अधिसूचित किया गया है– अनुसूचित जनजाति और अनुसिूचित आदिम जनजाति हिन्दु विवाह अधिनियम , हिन्दु विवाह अधिनियम की द्यारा 2 के अनसु ार अनुसूचित जनजाति के सदस्यों पर लागू नही है। आदिवासी लोग अपने त्योहारों का पालन करते है जिनका किसी भी धर्म के साथ कोई संघर्ष नही है आदिवासी रीति रिवाज के अनुसार ही विवाह करते है अपनी जनजातीय प्रथा के अनुसार विवाह तथा उत्तराधिकार से जड़े मामलों में सभी विशेषाधिकार को बनाए रखने का उनके जीवन का अपना तरीका है। भारत का विभाजन चार प्रमुख क्षेत्रों में किया जा सकता है उत्तपूर्वीय क्षेत्र, मघ्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र और दक्षिणी क्षेत्र। भारतीय समाज व्यवस्था से मुख्य धारा से अलग थलग दुर्गम जंगलों बीहड़ वनां प्रकृति की खुशनुमा गोद में हजारो वर्षों से मस्तमौला जीवन जीन` वाले आदिवासियों की अपनी अलग ही दूनिया है उनका रहन–सहन नृत्य, गीत संगीत, पर्व त्योहार, समाजिक व्यवस्था अर्थ तत्रं , संस्कृति एब कुछ प्रकृति के साथ अदभूत सामजं स्य से संचालित है आदिवासी संस्कृति के पृष्ठों में मनुष्य उत्यानपतन की कहानियाँ छीपी हुई है। इतिहासविद डी० डी० को सम्बी के अनुसार – प्रागेतिहासक युग मे निषाद प्रजा बसती थी जो भारतीय संस्कृति की जन्मदात्री है

'' डी० डी०'' को सम्बी निषाद को ही भील माने है।

भारतीय सम्यता के विकास में भीलों का अन्नय योगदान रहा है इस संस्कृति ने प्रगैतिहासिक युग में भारतीय संस्कृति का चेतना दी है

आदिवासी भारत के मुल निवासी है इनका जीवन उपेक्षित रहा है, बल्कि इन्हें जंगली मनुष्य समझा जाता रहा है। जो आदिवासी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है वर्तमान समय में आदिवासी आंदोलदन और इनकी जागृत्रि मे कद्वर पांक्षियों ने सहयोग दिया जिससे इनकी समाजिक स्थिति में कुछ सुधार हो रहा है। संस्कृति शब्द की अनेक अर्थ छायाएँ है। संस्कृति शब्द परोक्ष रूप मं` संस्कार का संकेतित करता है। समान्य समाज में शिष्ट मनुष्यों के साहित्यिक, समाजिक राजनितिक, आर्थिक नैतिक, आध्यात्मिक कलात्मक, विचारों व कार्यकलापो को संस्कृति मे शामिल किया जाता है। सस्ं कृति वस्तुतः जीवन दर्शन है अतः मानव समाज मे संस्कृति का विशेष वचस्व होता है दुर्गम वनों पर्वत के मध्य सदियों से पल्लवीत और पुष्पित वे संरक्षित आदिवासी संस्कृति अनके लोकाचार को भारतीय सन्दर्भ मे देखा जाए तो उनमे मानवीय मुल्योंका अटटू भंडार है। उनके जन्मजात गुणधर्मों मे सरलता, सहजता सच्चाई , ईमानदारी परिश्रमशीलता सामुहिकता, समानता व प्रकृति से धनिष्ठता की भावंना विद्यमान है। भारत के आदवासी संस्कृति के भीतर जाति समानता लिंग समानता सध्यागिता, सहयोगिता

समूह भावना व प्रकृति से निकठस्थ सम्बन्ध है। समूह भावना आविासी समाज के जीवन का सार है। आदिवासी जीवन व्यक्ति केन्द्रित नही बल्कि समाज केन्द्रित रहा है।

रमणिका गुप्ता जी ने लिखा है कि वह अकेला नही समूह में साचता है समाजिक सांस्कृतिक क्रिया कलापों मे उनकी समान

भागीदारी रहती है आदिवासीयां का दृष्टिकोण उपयोगितावार एवं सामुहिकता है समूह जीवन प्रत्येक आदिवासी समुदाय का सार है आजकेयुग का मानव समाज की संकल्पना को लके र संकृचित होता जा रहा है भारत मे प्रत्येक आदिवासी समुदायों मे समूह भावना की उदांत परम्परा है डा० बुद्धदेव के मतानुसार

''आदिवासी समदू ाय एक बडे परिवार की भांति है जहाँ प्रत्येक सदस्य अपनी सक्षमता के अनसू ार, योगदान दते ा है, यहाँ तक कि वहाँ पथभ्रष्ट को भी सहारा मिल जाता है, श्रम के फलों के सामूहिक उपयोग मे ही उनके पारस्परिक लने देन का पूरा समायोजन हो जाता ह। सामाजिक सांस्कृतिक क्रिया कलापों में आदिवासी समुदायों की भागीदारी अनिवार्यतः रहती है।

समानता पर आधारित होना आदिवासी संस्कृति की विशिष्टपहचान है। समानता के पक्षधर इस समाज मे रंगभद , वर्णभेद, लिंगभेद, धर्मभेद, सम्प्रदाय भेद, प्रदेश भेद, आदिभेद रहित मूल्यों से लैस उत्तम सामाजिक व्यवस्था न केवल भारत मं बल्कि परू े विश्व मे भी नही है। आदिवासी समतामूलक समाज खुला और व्यापक है जिसमें समाजिक समरसता का घोल है। विज्ञापनों से जाहिर होता है कि भारत मे जातीय पहचान की परिष्कतृ कर वर्गीकृत किया जाता है।

भारतीय सरं कृति का मूलउत्स आदिवासी संस्कृति है। सरलता, सहजता, समानता, अपरिग्रह, परिश्रमशीलता, बन्धता आदि तत्वों से सम्पन्न आदिवासी सरं कृत्ति विशिष्टतम हैं। उनकी संस्कृत्ति मे भव्य व दिव्य जीवन सुराक्षित है। 5 जून 1972 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्द्रा गॉधी ने अपने बस्तर दौरे मे संबोधित किया था – बस्तर के वनवासी बड़ी शानदार संस्कृत्ति के धनी है और अपनी रंगारंग वेशभषा एंव उत्फल नर्तन पर तो इंगलैंड की महारानी तक मोहित है आपकों इस संस्कृत्ति को बदस्तूर जीवित रखना हैं। आदिवासी स्त्री गैर आदिवासी स्त्री की अपेंक्षा अधिक स्वावलम्बी, परिश्रमी व साहसी होती हैं। नागा, खादी आदिवासी समुदायों मे आज भी मातृसत्तात्मक परिवार प्रथा विद्यामान है। खारनी आदिवासी समुदायों में बच्चों गोत्र में माँ के गोत्र पर रखे जाते है और सम्पत्ति में पुत्री अधिकारी हेाती है। गैर आदिवासी कथित सभ्य समाजों में व्याप्त भ्रूण हत्या की घृणित प्रथा आदिवासी समाज में नही है। डॉ0 पटले ने लिखा है कि ''भील आदिवासी समाज में स्त्री के विधवा हो जाने के बाद अपने मूल पति के घर मं ही दूसरा पति ला सकती है। पूर्व पति की सम्पति की स्वयं स्वामिनी बन सकती है।

यह परम्परा मातृसत्तात्मक समाज की गवाही देती है।

मुख्य धारा से दरू जंगलों में निवास करने वाली आदिम जनजातियां आज भी सांस्कृतिक विलक्षणताओं के साथ जीवन–यापन कर रही है। आदिवासी प्राचीन देवताओं यथा इल्हादेव, नारायणदेव सूरजदेव, माता–भाई, खैरमाता, ठाकुर एवं घनश्यामदेव, बाघेश्वर आदि की आराधना करते हैं। आदिवासियों का प्रमुख आर्थिक आधार कृषि व वनोपज है।

तेंदुपता, माहुल पता, जलाद, लकड़ी बिनना तथा बेचना, बांस की बनी चीजें पतल, दोना शहद इकट्ठा करना आदि प्रमुख कार्य है। आदिवासी समाज में सामूहिकता की भावना ही व्यक्तियों को समूह में बाँधें रखती है। यो तो आदिवासी समाज में सामुदायिक भावना अधिक पाई जाती है।

आदिवासी क्षेत्रों में स्थापित उद्योगों में उनकी भागीदारी का कोई प्रावधान नही किया गया इसके लिए आदिवासियों को प्रशिक्षित करके रोजगार की वैकल्पिक व्यवस्था की जानी चाहिए। औधिगिकरण ने नगरीय मनोवृत्तियों को बढ़ाकर व्यक्तिवादिता, लाभ की भावना, अनावश्यक प्रतियोगिता, औपचारिक संबंधों तथा भौतिकवाद के प्रति आकर्षण पैदा करके आदिवासी समाज में जटिल समस्याओं को जन्म दिया है। औद्योगिक सरं थाओं के जमीन अधिग्रहण करने से सबसे अधिक विस्थापन आदिवासियों को सहना पडत़ ा है। आज आदिवासियों को सहना पड़ता है। आज आदिवासियों का व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक राजनैतिक व सामुदायिक रूप से विघटन हो रहा है। विकास के नाम पर स्थापित परियोजनाओं ने आदिवासी समाज को कमजोर और खोखला कर दिया है। आदिवासी समुदाय में हर व्यक्ति की अपनी अस्मिता होती है। आधुनिकी करण और संस्कृतिकरण के चलते आदिवासी समुदाय अपनी अस्मिता को नष्ट होने से नही बचा पा रहे हैं।

हिन्दी साहित्य में स्वतंत्रता पूर्व तक आदिवासी जीवन उपेक्षित रहा है। रेणु ने ''मैला आंचल'' में संथाल आदिवासी जीवन की झलक दी है। 1960 में देश का उपेक्षित अंचल बस्तर के गोड आदिवासी जनजीवन को लेकर राजेन्द्र अवस्थी ने 'जंगल के फूल' उपन्यास द्वारा इनका वर्णन किया। राजेन्द्र अवस्थी ने 'जंगल के फूल' उपन्यास के अंतगर्त आदिम सभ्यता में जीवन यापन करते बस्तर के मुड़िया तथा घोटुल जीवन का महत्व, उनकी मान्यताएँ, रीति–रिवाज, नृत्य, विश्वास, अंधविश्वास, समाज एवं संस्कृति, अधिकारों के लिए संघर्ष, संघर्ष में स्त्री–पुरूष का सहयोग आदि का चित्र प्रस्तुत किया गया है। गोंड समाज ने अपने युवा धन घोटुल इस गाँव की सम्पति है। गाँव भर के लोग मेहनत कर इसे बनाते है–घोटुल कच्ची मिट्टी की फसू की एक छोटी सी झोंपड़ी है– घोटुल के सारे सदस्य अपनी लगन से इसे बनाते है। उनकी कला इन चित्रों में बोलती है। घोटुल के खुले मैदान के बीच आग जलती रहती है, यही उनका उजाला है, जो जंगली जानवरों से रक्षा करती है।

संताल आदिवासी भी अपनी सांस्कृतिक परपं राओं से जुड़ा है। उनके पर्व रगं ारंग त्योहार, नृत्य काफी मनमोहक होते हैं। इनमें सामूहिकता की भावना विकसित होती है। भील संस्कृति भारतीय संस्कृति की नीवं है। भील और मीणा आदिवासियों की सांस्कृतिक पहचान है उनकी सामूहिकता समूह भावना आदिवासी जीवन का सार है।

आदिवासी विकास संवेदनशील मुद्दा है। पं0 जवाहर लाल नेहरू आदिवासी विकास को लके र चिन्ता–ग्रस्त रहते थे, उनके पंचशील सिद्धांतो में से एक में उन्होनें कहा था कि ''आदिवासियों का विकास हो यह अत्यंत जरूरी है। किन्तु उनका जीवन और सरं कृति जो उन्हे दसू रों से अलग करते है, उसका आनंद खीचे बिना ही उनका विकास करना है। लेकिन आज वही सब हो रहा है जिसका नेहरू जी को डर था आदिवासियों के जंगल, जमीनों गावों, संसाधनों पर कब्जा कर उन्हे दर–दर भटकने क मजबुर करने के पीछे सरकारी व्यवस्था का नही मिल पाना ह।

सरकार ने आदिवासियों के लिए विभिन्न योजनाएँ चलायी लेकिन इसका लाभ आदिवासियों को बहुत कम मिल पाता है और योजनाएँ कागजी ही रह जाती है।

आज का आदिवासी संस्कृति हिन्दू और ईसाई के दोहरे हमलों के संकट से गुजर रही है। आदिवासीयों के जंगल– जमीन भी छिन गयी है, उनकी भाषा भी छीनी जा रही है। उनके गीत, संगीत, नृत्य रिति रिवाज पर्व उत्सव सीमित होते जा रहे ह। भारतीय आदिवासियों की परंपरागत धर्म व्यवस्था आज संक्रमित अवस्था मे है एक तरफ हिन्दकू रण तो दसू री तरफ ईसाईकरण। आदिवासीयों के धर्म– परिवर्तन विवादास्पद और संवेदनशील मुद्दा भी है आदिवासी जीवन बदलाव के दौर से गुजर रहा है। बाहरी समाजों के संपर्क के चलते आदिवासीयों के व्यापक समाज मे भी संकुचल की प्रकृति आ गयी है आदिवासी समाज मे भी जाति का जहर फैलता जा रहा है। उपभोक्ता वादी संस्कृति, भ्रष्टाचार, पर्यावरण असंतुलन, प्रदूषण, जैविक मूलयो का हास आधूनिकता– वाद सभी का प्रभाव पड़ रहा है।

भारत के आदिवासीयों का इतिहास आर्यों के आगमन से पूर्व है कई युगों तक इसका उप महाद्धीप के पहाड़ी भूभगों मे उनका आधिपत्य था। औपनिवेशिक अवधि के दौरान आदिवासियों को जन जातियों का नाम दिया गया और स्वाधिनता के बाद भारत मे उन्हें अनूसूचित जनजातियों के रूप में जाना जाता है। जनजातियों के सत्व की व्याख्या उद्धव के चरण के रूप मे की गई जो समाज के एक रूप के विपरीत था। जब क्षिक्षा केन्द्रों की स्थापना हुई तो यह व्याख्यान चुनिदा समुदायों के समाजिक सांस्कृतिक मूल आधारों पर केन्द्रित हो गया जिससे गैर–आदिवासी बच्चे आदिवासियों की संस्कृति से वंचित रह गये।

हजारों आदिवासी युवा जीविका को तलाश मे नगरों में बस गए और उनमें कितने अपने जड़ों से कर गये उन पर आधुनिकता का प्रभाव पड़ने लगा, उनकी संतानें भी अपनी समृद्ध विरासत से दूर हो गए। कुछ आदिवासी समुदाय अपनी संतानों को उनकी परंपराओं से जोड़े रहते अपनी जीवन–शैली एवं कला, संस्कृति से रूबरू करवाया जिसमें मध्यप्रदेश के गोंड, भील तथा राजस्थान के भील समुदाय प्रमुख है।

आदिवासियों का अपना धर्म भी है। ये प्रकृति–पूजक हैं और वन, पर्वत, नदियों एवं सूर्य की अराधना करते है। आधुनिक काल में जबरन बाह्य संपर्क में आने के फलस्वरूप इन्होनें हिन्दु, इसाई एवं इस्लाम धर्म को अपनाया है। अंग्रेजी राज के दौरान बड़ी संख्या में ये इसाई बन गये तो आजादी के बाद इनके हिन्दूकरण का प्रयास तेजी से हुआ है। परतंु आज ये स्वंय की धार्मिक पहचान के लिए संगठित हो रहे हैं और भारत सरकार से जनगणना में अपने लिए अलग से धार्मिक कोड की मांग कर रहे हैं।

भारत में 1871 से लेकर 1941 तक हुई जनगणनाओं मे आदिवासियों को अन्य धर्मों से अलग धर्म में गिना गया है। जिसे एबओरिजिन्स, एबोरिजिनल, एनिमिस्ट, ट्राइब्स इत्यादि नामों से वर्णित किया गया है। 1951 के जनगणना के बाद से आदिवासियों को अलग से गिनना बन्द कर दिया गया है। भारत में आदिवासियों को वर्गों में अधिसूचित किया गया है – अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित आदिम जनजाति।

ठनके भौतिक संस्कृति तथा जीवनयापन के साधन, समाजिक संगठन धर्म, बाह्य संस्कृति, प्रभाव आदि की दृष्टि से आदिवासी भारत के विभिन्न वर्गीकरण करने के अनेक वैज्ञानिक प्रयत्न किए गए है। शिक्षा का प्रचार–प्रसार इनके बीच

सही तरीके से नही हुआ, जिससे जंगल आधारित अर्थ–व्यवस्था और कृषि का मेल नही होने से इन्हे लाभ नही मिला, जिससे जीविका के लिए पलायन करने की नौबत आती रही है।

उपसंहार

सामान्यतः ''आदिवासी'' (ऐबोरिजिनल)' शब्द का प्रयोग किसी भौगीलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है। जिनका उस भैगीलिक क्षेत्र से ज्ञात इतिहास में सबसे पुराना सम्बन्ध रहा है। परतं ु संसार के विभिन्न भूभागों मे जहाँ अलग – अलग द्याराओं मे अलग– अलग क्षेत्रों से आकर लोग बसे हो उस विशिष्ट भाग के प्राचिनतम या प्राचीन निवासियों के लिए भी इस शब्द का उपयोग किया जाता है उदाहरण ''इंडियन'' अमरीका के आदिवासी कहे जाते है और प्राचीन साहित्य मे दस्यू निषाद आदि के रूप म` जिन विभिन्न प्रजातियों समूहों का उल्लेख किया गया है उनके वंशज सम– समाजिक भारत के समानयी शब्दों मे ऐबीरिनिजन, इंडिजिनस, देशज, मुल निसासी, जनजाति भिरिजन, बर्बर आदि प्रचालित है। इनमें से हर एक शब्द के पीछे समाजिक व राजनीतिक संदर्म है। समाजिक व राजनीतिक संदर्म है समसाययिक आर्थिक शक्तियों तथा समाजिक प्रभावों के कारण भारतीय समाज के इन विभिन्न अंगों की दूरी कम हो रही है।

संदर्म– ग्रंथ

i. पी० आर० नायडु आदिवासी विकास की समस्याएँ

ii. आशा मेहता, स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों मे वैचारिकता भा० ग्रंब निकेतन (1977) iii. श्यामचरण दुबे परंपरा, इतिहास बोध और संस्कृति (1991) पृ०– 123

iv. रमणिका गुप्ता, आदिवासी लोक भाग–1 शिल्पायन, दिल्ली (1961)

v. हरि राम मीण, द्यूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम, जयपूर 2007 पृ०– 270

,